आम के सघन बागवानी में थैलाबंदी से गुणवत्तायुक्त फलों का उत्पादन

दिनेश कुमार, कंचन कुमार श्रीवास्तव, प्यारे लाल सरोज एवं श्याम राज सिंह
भाकृअनुप- केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रेहमानखेड़ा, लखनऊ, भारत
ईमेल: cishtarunadak@gmail.com

आम की सघन बागवानी वैज्ञानिक विधि के साथ-साथ फलों की थैलाबन्दी करने से फलों का विकास अच्छा होता है| फलों की तुड़ाई करने पर फल चिकना, हल्का सुनहरा पीला एवं कीट एवं रोगों से मुक्त होता है एवं फलों की गुणवत्ता अच्छी होती है| चूँकि सघन बागवानी में पौधों की उंचाई कम होने से थैलाबंदी आसानी से की जा सकती हैं एवं परिपक्व फलों की तुड़ाई भी आसानी से की जा सकती है|

भारतवर्ष में उगाये जाने वाले फलों का राजा आम का सर्वोच्च स्थान है इसका फल स्वादिष्ट, खुशबुदार, आकर्षक रंग तथा विटामिन से भरपूर होता है| जिसके कारण आम जन-जन में लोकप्रिय फल है, तथा इसी कारण से इसकी बागवानी को व्यावसायिक स्तर पर किया जाने लगा है| सामान्यतः आम को 10 x 10 मीटर की दूरी पर लगाने से एक हेक्टेयर में 100 पौधे लगते है लेकिन धीरे-धीरे पेड़ संख्या का घनत्व बढ़ने से किसानों का जोत कम होने लगा है जिसके कारण हमें सघन बागवानी की तरफ जाना पड़ रहा है| सघन बागवानी में आम को 5 × 5 मीटर (400 पौधा/हेक्टेयर), 5 × 2.5 मीटर (800 पौधा/हेक्टेयर), या 2.5 × 2.5 मीटर (1600 पौधा/हेक्टेयर), में लगाया जाता है लेकिन अधिक आय एवं गुणवत्तापूर्ण फल उत्पादन करने के लिए वैज्ञानिक विधि से सघन बागवानी की खेती जरुरी है| नए बागों की स्थापना के लिए अच्छी तरह गढ्ढे की खुदाई मई-जून महीने में की जानी चाहिए, उसके बाद उसमें सड़ी हुई गोबर की खाद 1-2 टोकरी एवं 500 ग्राम नीम की खली मिलाकर भर देना चाहिए। इसके बाद 1-2 बरसात होने पे गढ्ढो में पौधों को लगाना चाहिए| पौधे लगाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पौधे गढ्ढे के बीच में हो तथा कलम वाला हिस्सा जमीन से ऊपर हो एवं लगाने के बाद सिंचाई करना चाहिए ताकि पौधे आसानी से स्थापित हो सके। इसके बाद पौधों की देखभाल करते रहना चाहिए। पौध लगाने के तीसरे साल से फल आने लगता है यदि इन फलों को थैलाबन्दी की जाए तो चमकदार, धब्बे मुक्त एवं हल्का पीला रंग लिए हुए फल प्राप्त कर सकते है| भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, रेहमानखेड़ा, लखनऊ, में किये गए परिक्षण से यह पाया गया कि यदि आम्रपाली फलों की थैलाबंदी समय से की जाए तो इनकी गुणवत्ता में गुणात्मक वृद्धि हो जाती है, जिससे फलों को अधिक दामों में बेचकर कृषक ज्यादा लाभ कमा सकते है|

थैलाबंदी का समय: आम में थैलाबंदी तब करना चाहिए जब फलों का आकार आंवला के बराबर हो जाय (अप्रैल महीना) एवं सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे जिंक सल्फेट, कॉपर सल्फेट एवं बोरेक्स का पर्णीय छिड़काव करके एक थैले में एक फल बंद कर देना चाहिए । जिससे फलों की वृद्धि आसानी से हो सके ।

सघन बागवानी में थैलाबंदी से लाभ: सघन बागवानी में आम का पौधा छोटा होता है, जिससे फलों की थैलाबंदी आसानी से की जा सकती है| जिस थैले का प्रयोग किया जाता है वह बाहर से भूरे एवं अंदर से काले रंग की परत सहित होता है, और यह थैला बाजार में आसानी से मिल जाता है| फलों को उचित समय पर थैला पहनाकर धागे की सहायता से बाँध देना चाहिए । इसके प्रयोग से फलों में वायु का संचार पर्याप्त होने से फलों की वृद्धि अच्छी होती है जिससे गुणवत्तायुक्त फलों का उत्पादन होता है|

थैलाबंदी फलों की तुड़ाई: थैलाबंदी फलों की तुड़ाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि फल परिपक्व अवस्था में हो एवं फलों का रंग सुनहरा पीला हो तभी तुड़ाई करनी चाहिए। हालाँकि सघन बागवानी में पौधों की उंचाई कम होने से हाथ से तुड़ाई आसानी से हो जाती है| फल तोड़ते समय यह सावधानी रखनी चाहिए कि एक-एक फल को हाथ से सावधानीपूर्वक

तोड़ना चाहिए ताकि फलों को चोट या खरोच न लगे। तुड़ाई के बाद फलों को छायादार स्थान पर अच्छी तरह रखना चाहिए। फलों को करीब एक सेंटीमीटर लम्बे डंठल के साथ तोड़ने से फलों की भण्डारण क्षमता बढ़ जाती है|

फलों का श्रेणीकरण : आम के फलों का श्रेणीकरण करने से बाजार में उसकी अच्छी कीमत मिलती है| फलों की तुड़ाई एवं सफाई के बाद श्रेणीकरण बहुत जरुरी है| आम के फलों का श्रेणीकरण प्रायः आम के आकार, रंग एवं वजन पर निर्भर करता है| फलों के श्रेणीकरण के लिए फल पूर्ण विकसित, ताजा, स्वस्थ्य एवं व्याधियों इत्यादि से मुक्त होना चाहिए।

फलों की गुणवत्ता: आम्रपाली फलों का थैलाबंदी किये गए फलों का आकार सामान्य, सुनहरा पीला एवं धब्बा रहित होता है एवं फलों की गुणवत्ता उत्तम होती है| थैलाबंदी वाले फलों का एसिडिटी एवं फर्मनेस अधिक होता है जबकि बिना थैलाबंदी वाले फलों का टी.एस.एस. अधिक होता है जिससे सामान्य तापमान पर थैलाबंदी वाले फलों की भण्डारण क्षमता अच्छी होती है|

सघन बागवानी की खेती करने से प्रति इकाई क्षेत्र में उत्पादन बढ़ता है यदि साथ में फलों की थैलाबंदी करते है तो गुणवत्ता युक्त फल का उत्पादन किया जा सकता है जिसकी बाजार में कीमत अच्छी मिलने के साथ साथ किसानों को लाभ भी अधिक होता है| यह तकनीक पर्यावरण हितैषी है एवं आसानी से फलों को थैलाबंदी किया जा सकता है|

थैलाबन्दी एवं बिना थैलाबन्दी फलों की तुलना

आम्रपाली के थैलाबन्दी एवं बिना थैलाबन्दी वाले फल